शीत-ऋतू (शिशिर)

अथवा

सर्दी का मौसम

यों तो कार्तिक के अन्त में थोड़ी-थोड़ी सर्दी पड़ने लगाती है | खासकर रातें ठंडी हो जाती हैं | परन्तु असली शीत ऋतु पौष और माघ महीनों में होती है |

शिशिर-ऋतु में ख़ूब ठंड पड़ती है | सवेरे रजाई से बाहर निकलने को जी नहीं करता | यदि उठकर बाहर आ जाएँ तो ठंडी हवा के थपेड़े तंग करने लगते हैं | स्नान की इच्छा ही नहीं होती | हाथ ठिठुरने लगते हैं | अधिक सर्दी पड़े, तो दांत किटकिटाने लगते हैं |

दिन में सूर्य ऐसे लगता है, जैसे चन्द्रमा हो | धुप फीकी-फीकी लगती है, जैसे चाँदनी हो | धुप में बैठना अच्छा लगता है | परन्तु धूप में तेजी नहीं होती | यदि कहीं शिशिर में वर्षा हो जाए तो सर्दी और भी बढ़ जाती है | तब तो आग तापने पर ही ठंड से छुटकारा मिलता है |

सर्दी से बचाव के लिए लोग स्वेटर और गरम कोट या सूट पहनते हैं | लड़कियाँ भी चूड़ीदार पजामा या गरम सलवार और सूट पहनती हैं |

साँझ के बाद कई बार चरों ओर धुन्ध छा जाती है | चन्द्रमा तारे जैसा दिखाई देने लगता है |

कड़ाके की सर्दी में भी हमारे किसान सवेरा होते ही हल-बैल लेकर खेतों पर काम करने चले जाते हैं | खेतों की रखवाली कि लिए कई बार उन्हें रात को भी खेत पर सोना पड़ता है | तब वे पुआलआदि जलाकर आग तापते हैं |

शीतकाल में जो खाओ, पच जाता है | नया खून बनता है | स्वास्थ्य अच्छा हो जाता है | सर्दी से बचाव के लिए व्यायाम का भी सहारा लिया जा सकता है |

1- Metindeki cümlelerin yapısı incelenerek, çevirisi yapılacaktır.